जनवरी

खुशवन्त सिंह

कुछ लोगों के लिए नया साल शुरू होता है आधी रात से – 31 दिसम्बर की रात 12 बजते ही नाच-गाने होते हैं, गुब्बारे फोड़े जाते हैं, खाना-पीना, मौज-मस्ती होती है। और कुछ के लिए 1 जनवरी की सुबह सूरज की पहली झलक के साथ नए साल का सफर शुरू होता है। लेकिन मेरा नया साल कहीं इन दोनों के बीच शुरू होता है। तब जब अपने घर के दरवाज़े के बाहर बैठी बिल्लियों को दूध देने के लिए मैं अपना बिस्तर छोड़ता हूँ। उन्हीं के पास अखबार पड़ा नज़र आता है। इस वक्त सुबह के 4.30 बज रहे होते हैं। जब तक अखबार न पढ़ लूँ लगता ही नहीं कि दिन चढ़ गया है। चाय पीने के बाद मैं खिड़की के परदे हटा देता हूँ। धीरे-धीरे रात का अँधेरा उजाले में बदलने लगता है। पास के शहतूत के पेड़ से उल्लुओं की आवाज़ सुनाई पड़ती है। कुछेक चमगादड़ इधर-उधर उड़ते दिखाई दे जाते हैं। थोड़ी ही देर में कौओं की कर्कश काँव-काँव के साथ-साथ गौरैयों और दूसरे पक्षियों की तीखी आवाज़ों का संगीत बज उठता है। कभी-कभी अँधेरा जाने से पहले ही मैं आँगन में निकल आता हूँ – कभी चाँद देखने, कभी सुबह के चमकते तारे देखने।

नैस्ट्रेशियम

फिर अन्दर आकर रेडियो चालू कर स्वर्ण मन्दिर की गुरबाणी सुनता हूँ। कुछ ही देर में मेरी सुबह की सैर और खेल का समय होने वाला है। हर मौसम में मेरे खेल के साथी बदलते रहते हैं। कभी श्यामा (मैगपाई रॉबिन), पीलक (ओरिऑल), बसन्ता (बारबेट), कोयल, पपीहा तो कभी कोई और। टैनिस खेलते वक्त जब भी मैं गेंद को उछालकर शॉट मारने को होता तो पेड़ पर बैठे घनेष, लैपविंग अक्सर मेरा ध्यान बँटा देते।

आमतौर पर नए साल का सूरज सुबह 7.14 बजे निकलता है। इन दिनों लगभग पूरा उत्तर भारत कड़ाके की ठण्ड में जम रहा होता है। कभी-कभी तो न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेंटीग्रेड से भी नीचे चला जाता है। और दिन में अगर चमकदार सूरज निकला तो भी दिल्ली में तापमान 18 डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर नहीं जाता। ठण्ड कमज़ोर और बेघरों के लिए मौत बनकर आती है। ठण्ड की सुबहें अक्सर कोहरे से भरी होती हैं। क्रिसमस से जो कोहरा पड़ना शुरू होता है तो बीच जनवरी तक बना ही रहता है। कई बार तो इस वजह से रेल, हवाईजहाज़ का समय भी बदलना पड़ता है।

इस महीने दिन-रात की लम्बाई के बारे में मुझे कुछ अजीब-सी बात नज़र आई। 22-23 दिसम्बर को सबसे छोटा दिन और सबसे लम्बी रात होती है। इसके बाद से दिन बड़े होते जाते हैं और रातें छोटी होती जाती हैं। इस हिसाब से तो अब हर दिन सूरज थोड़ा जल्दी उगना चाहिए और डूबना थोड़ी देर से चाहिए। लेकिन ऐसा होता दिखता नहीं है। दिल्ली में 1 जनवरी की सुबह सूरज 7.14 पर उगता है। और उसके अगले दिन थोड़ा पहले उगने की बजाय कुछेक मिनट देर से उगता है। दूसरी ओर, पहली दो शामों को यह 5.35 बजे डूबता है। हर दिन यह लगभग एक मिनट देर से डूबता है। गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) आते-आते तक यह केवल तीन मिनट पहले (7.11 बजे) उगता है जबकि डूबता लगभग 20 मिनट बाद है (शाम 5.55 को)। यह गड़बड़ी शायद पृथ्वी के अण्डाकार होने की वजह से है।

13 जनवरी को जब लोहड़ी आती है तो सर्दियाँ अपने शबाब पर होती हैं। लोहड़ी पर लोग आग जलाते हैं। बच्चों की टोलियाँ घर-घर जाकर पैसे इकट्ठा करती हैं। सर्दियाँ अब कुछ ही दिनों की मेहमान रह गई हैं। अकसर 26 जनवरी के आसपास छुटपुट बूँदाबाँदी भी हो जाती है। आमतौर पर बसन्त आते-आते तक सर्दियाँ खत्म होने लगती हैं। वो कहते भी तो हैं –*आया बसन्त, पाला उड़न्त*!

बोगनबेलिया

चित्र - शुद्धसत्व बसु

जनवरी में रंग देखने हों तो शहर से थोड़ा बाहर निकल आएँ। खेतों में सरसों के पीले समन्दर फैले दिख जाएँगे। फूलों की तीखी-मीठी गंध मधुमक्खियों को अपनी ओर खींचे रखती है। सरसों के अलावा अरहर (तुअर), गन्ना, गेहूँ की बालियाँ भी खेतों में लहलहा रही हैं। लेकिन बाग-बगीचों में स्थिति इसके उलट है। जनवरी के खत्म होते तक गेंदा, पॉइनसेटिया, गुलदाउदी, बोगनबेलिया आदि में फूल नज़र आने लगते हैं। धीमे-धीमे बिगनोनिया की बेलें भी नज़र आने लगती हैं। गुलाबी फ्लॉक्स और नैस्ट्रेशियम का भी यही किस्सा है।

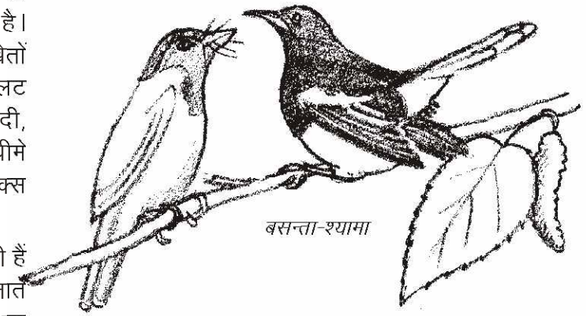

बसन्ता-श्यामा

सर्दियाँ जहाँ छोटे पक्षियों के उत्साह को कुछ कम कर देती हैं वहीं चील और बाज़ जैसे बड़े पक्षी इसी समय अपना जोड़ा बनाते दिखते हैं। सेमल या महारुख जैसे बड़े पेड़ों पर इन्हें देखा जा सकता है। कौए, गौरैया, कबूतर जैसे छोटे पक्षी अपने साथी की तलाश शुरू कर देते हैं।

एक रेडस्टार्ट (या शायद एक से ज़्यादा) सर्दियों के महीनों में सालों से मेरे बगीचे में दिखाई देती थी। छोटी-सी प्यारी-सी चिड़िया। मैं बरामदे पर अपनी कुर्सी पर बैठा रहता और वह आसपास घूमती-फुदकती रहती। ज़रा-सा फुदकती फिर अपनी पूँछ में एक हरकत लाती। एक शाम अपने बगीचे में मुझे लाल-से रंग के कुछ पंख दिखे। मैं समझ गया मेरी बिल्लियाँ ही उसे मुझ तक लाई होंगी – हमेशा के लिए अलविदा कहने के लिए।

पिंक्स

गेंदा

बिगनोनिया

फलॉक्स

गुलदाउदी

पॉइनसेटिया

❄

इस बार तुमने *नेचर वॉच* नामक किताब के कुछ हिस्से पढ़े।

यह किताब साल भर हमारे आसपास होने वाली हलचलों और करतबों की एक डायरी है। गतिविधियाँ फूलों, पेड़ों, तितलियों, कीड़ों, साँपों..., चाँद-तारों की। और ऐसी ही कई हलचलों की जिन्हें हम नज़रअन्दाज़ करते चले जाते हैं। लेकिन वे हैं कि हर साल अपने मौसमों में आती रहती हैं।

मशहूर लेखक खुशवन्त सिंह द्वारा लिखी इस किताब को चित्रकार शुद्धसत्व बसु के चित्रों ने चार चाँद लगा दिए हैं। चित्र इस कदर सजीव हैं कि पढ़ते हुए तुम्हारी उँगलियाँ उन्हें छेड़ने चली जाएँगी।

इस किताब की कीमत है 395 रुपए। और इसे हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इण्डिया लिमिटेड ने छापा है। इसे मँगाने के लिए तुम ए-53, सेक्टर 57, नोएडा, उ. प्र. के पते पर लिख सकते हो।